SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-02, December- 2024
www.shikshasamvad.com

"पुस्तक समीक्षा: "दिवास्वप्न" (Diva Swapna)"

Syad Abdul Wahid Shah
Assistant Professor,
Department of Teacher Education (B.Ed.)
Government Raza Post Graduate College,
Rampur, U. P.

पुस्तक: "दिवास्वप्न" (Diva Swapna)

लेखक: गिजुभाई बधेका

प्रकाशक: नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद

प्रकाशन वर्ष: मूल गुजराती में 1932 में प्रकाशित; (हिंदी अनुवाद उपलब्ध)

गिजुभाई बधेका द्वारा लिखित "दिवास्वप्न" भारतीय शिक्षा जगत की एक अमूल्य कृति है। यह पुस्तक न केवल शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान है, बल्कि बाल मनोविज्ञान और शिक्षण पद्धति पर एक गहन चिंतन भी प्रस्तुत करती है। "दिवास्वप्न" शब्द का अर्थ है "दिन का सपना", जो इस पुस्तक के मूल विचार को बखूबी प्रस्तुत करता है - एक ऐसी शिक्षा प्रणाली जो बच्चों के सपनों और कल्पनाओं को साकार करने में मदद करे।

पुस्तक का सार / Book Summary

"दिवास्वप्न" एक कल्पित कहानी के माध्यम से शिक्षा के नए दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है। कहानी एक युवा शिक्षक लक्ष्मीराम की है, जो एक ग्रामीण स्कूल में नियुक्त होता है। वह पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों से असंतुष्ट है और एक नए प्रयोग की शुरुआत करता है। लक्ष्मीराम अपनी कक्षा में बच्चों को स्वतंत्रता देता है, उनकी रुचियों को प्रोत्साहित करता है, और

उन्हें खेल और गतिविधियों के माध्यम से सीखने का अवसर देता है। यह प्रयोग शुरू में विवादास्पद होता है, लेकिन धीरे-धीरे इसके सकारात्मक परिणाम सामने आते हैं।

मुख्य विचार और सिद्धांत / Key Ideas and Principles

1. बाल-केंद्रित शिक्षा / Child-Cantered Education

गिजुभाई का मानना था कि शिक्षा का केंद्र बच्चा होना चाहिए, न कि पाठ्यक्रम या शिक्षक। उन्होंने बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा और सीखने की क्षमता पर बल दिया। पुस्तक में लक्ष्मीराम बच्चों को उनकी रुचि के विषयों पर काम करने की स्वतंत्रता देता है, जिससे वे अधिक उत्साह और ध्यान से सीखते हैं।

2. अनुभव आधारित शिक्षा / Experience-Based Education

"दिवास्वप्न" में गिजुभाई ने अनुभव आधारित शिक्षा के महत्व पर जोर दिया है। वे मानते थे कि बच्चे सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब वे स्वयं करके देखते हैं। पुस्तक में लक्ष्मीराम बच्चों को प्रकृति में ले जाता है, उन्हें प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित करता है, और वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़कर पाठ पढ़ाता है।

3. खेल का महत्व / Importance of Play

गिजुभाई ने खेल को शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना। उनका मानना था कि खेल के माध्यम से बच्चे न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ रहते हैं, बल्कि महत्वपूर्ण जीवन कौशल भी सीखते हैं। पुस्तक में लक्ष्मीराम विभिन्न खेलों और गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को गणित, विज्ञान और भाषा सिखाता है।

4. स्वतंत्रता और अनुशासन का संतुलन / Balance between Freedom and Discipline

"दिवास्वप्न" में गिजुभाई ने स्वतंत्रता और अनुशासन के बीच संतुलन की आवश्यकता पर बल दिया है। वे मानते थे कि बच्चों को स्वतंत्रता देनी चाहिए, लेकिन साथ ही उन्हें जिम्मेदारी का भी अहसास कराना चाहिए। पुस्तक में लक्ष्मीराम बच्चों को निर्णय लेने की स्वतंत्रता देता है, लेकिन साथ ही उन्हें अपने कार्यों के परिणामों के प्रति जागरूक भी करता है।

5. शिक्षक की भूमिका / Role of the Teacher

गिजुभाई ने शिक्षक की भूमिका को एक सुगमकर्ता के रूप में परिभाषित किया। उनका मानना था कि शिक्षक का काम केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि बच्चों में सीखने की इच्छा जगाना और उन्हें सही दिशा देना है। पुस्तक में लक्ष्मीराम एक ऐसे शिक्षक के रूप में दिखाया गया है जो बच्चों के साथ मित्रवत व्यवहार करता है और उनकी क्षमताओं पर विश्वास करता है।

पुस्तक की विशेषताएँ / Features of the Book

1. कथात्मक शैली / Narrative Style

गिजुभाई ने अपने विचारों को एक कहानी के रूप में प्रस्तुत किया है, जो पुस्तक को रोचक और पठनीय बनाता है। यह शैली न केवल पाठक का ध्यान बनाए रखती है, बल्कि जटिल शैक्षिक सिद्धांतों को सरल और समझने योग्य बनाती है।

2. यथार्थवादी चित्रण / Realistic Portrayal

पुस्तक में वर्णित परिस्थितियाँ और चुनौतियाँ वास्तविक जीवन से मेल खाती हैं। गिजुभाई ने स्कूल प्रशासन, अभिभावकों और समुदाय के प्रतिरोध को बखूबी चित्रित किया है, जो किसी भी शैक्षिक सुधार के मार्ग में आने वाली वास्तविक बाधाओं को दर्शाता है।

3. व्यावहारिक उदाहरण / Practical Examples

पुस्तक में अनेक व्यावहारिक उदाहरण और गतिविधियाँ दी गई हैं, जो शिक्षकों और अभिभावकों के लिए बहुत उपयोगी हैं। ये उदाहरण सिद्धांतों को व्यवहार में लाने में मदद करते हैं।

4. मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण / Psychological Approach

गिजुभाई ने बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ का परिचय दिया है। वे बच्चों के व्यवहार, उनकी प्रेरणाओं और सीखने की प्रक्रिया को बारीकी से समझाते हैं।

5. समग्र शिक्षा का दृष्टिकोण / Holistic Education Approach

"दिवास्वप्न" केवल शैक्षिक उपलब्धियों पर ध्यान केंद्रित नहीं करती, बल्कि बच्चे के समग्र विकास पर जोर देती है। पुस्तक में नैतिक मूल्यों, सामाजिक कौशल और व्यक्तिगत विकास पर भी ध्यान दिया गया है।

पुस्तक "दिवास्वप्न" से एक उदाहरण

गिजुभाई बधेका की पुस्तक "दिवास्वप्न" में एक प्रसिद्ध उदाहरण है जिसमें वे गणित शिक्षण के एक नवीन तरीके का वर्णन करते हैं। यह उदाहरण इस प्रकार है:लक्ष्मीराम, पुस्तक का मुख्य पात्र, एक दिन अपने विद्यार्थियों को गणित सिखाने के लिए कक्षा से बाहर ले जाता है। वह उन्हें एक पेड़ के नीचे ले जाकर बैठाता है और कहता है, "आज हम पत्तों से गणित सीखेंगे।"वह बच्चों से कहता है, "अपने आसपास से कुछ पत्तियाँ इकट्ठा करो।" बच्चे उत्साह से पत्तियाँ इकट्ठा करते हैं।फिर लक्ष्मीराम उनसे कहता है, "अब अपनी पत्तियों को गिनो और बताओ कि तुम्हारे पास कितनी पत्तियाँ हैं।" हर बच्चा अपनी पत्तियाँ गिनता है और अपनी संख्या बताता है।इसके बाद लक्ष्मीराम उन्हें समूह बनाने के लिए कहता है। वह कहता है, "अपनी पत्तियों के दो बराबर ढेर बनाओ।" बच्चे अपनी पत्तियों को दो भागों में बाँटते हैं।फिर वह उनसे पूछता है, "यदि तुम्हारे पास 10 पत्तियाँ थीं और तुमने उन्हें दो बराबर भागों में बाँटा, तो प्रत्येक ढेर में कितनी पत्तियाँ हैं?" बच्चे अपने-अपने ढेरों को देखकर उत्तर देते हैं, "5-5 पत्तियाँ।"इस तरह, लक्ष्मीराम बच्चों को प्रकृति के साथ जोड़कर, खेल-खेल में

गणित की मूलभूत अवधारणाएँ सिखाता है। यह उदाहरण गिजुभाई के अनुभव-आधारित शिक्षण और खेल द्वारा सीखने के सिद्धांतों को दर्शाता है।

पुस्तक का प्रभाव और प्रासंगिकता / Impact and Relevance of the Book

"दिवास्वप्न" का प्रभाव भारतीय शिक्षा जगत पर बहुत गहरा रहा है। यह पुस्तक न केवल शिक्षकों और शिक्षाविदों के लिए एक प्रेरणास्रोत रही है, बल्कि नीति निर्माताओं और शिक्षा सुधारकों के लिए भी एक मार्गदर्शक का काम करती रही है।

1. **रटंत प्रणाली का विकल्प**: आज भी जब भारतीय शिक्षा प्रणाली रटंत विधि से जूझ रही है, "दिवास्वप्न" एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है जो समझ और अनुभव पर आधारित है।
2. **21वीं सदी के कौशल**: पुस्तक में वर्णित शिक्षण पद्धतियाँ रचनात्मकता, समस्या समाधान और आलोचनात्मक सोच जैसे 21वीं सदी के महत्वपूर्ण कौशलों को विकसित करने में सहायक हैं।
3. **समावेशी शिक्षा**: गिजुभाई का दृष्टिकोण हर बच्चे की व्यक्तिगत क्षमताओं और आवश्यकताओं को पहचानने पर जोर देता है, जो आज की समावेशी शिक्षा की अवधारणा से मेल खाता है।
4. **शिक्षक प्रशिक्षण**: "दिवास्वप्न" शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है, जो शिक्षकों को बाल-केंद्रित शिक्षण पद्धतियों से परिचित कराता है।
5. **डिजिटल युग में प्रासंगिकता**: यद्यपि पुस्तक डिजिटल युग से पहले लिखी गई थी, इसके सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। गिजुभाई के विचार तकनीक के साथ एकीकृत किए जा सकते हैं, जैसे कि गेमिफिकेशन और इंटरैक्टिव लर्निंग।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

सकारात्मक पक्ष / Positive Aspects

1. **नवीन दृष्टिकोण**: गिजुभाई ने अपने समय से काफी आगे का सोचा था। उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उस समय थे।
2. **व्यावहारिक दृष्टिकोण**: पुस्तक केवल सिद्धांतों तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यावहारिक समाधान भी प्रस्तुत करती है।
3. **मनोवैज्ञानिक आधार**: गिजुभाई ने बाल मनोविज्ञान की गहरी समझ का परिचय दिया है, जो उनके शैक्षिक दृष्टिकोण को वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है।

सीमाएँ और चुनौतियाँ / Limitations and Challenges

1. **कार्यान्वयन की चुनौतियाँ**: यद्यपि गिजुभाई के विचार आदर्श हैं, बड़े पैमाने पर इनका कार्यान्वयन चुनौतीपूर्ण हो सकता है, विशेषकर संसाधनों की कमी वाले स्कूलों में।

2. **परीक्षा-केंद्रित प्रणाली**: वर्तमान शिक्षा प्रणाली में, जो अभी भी बहुत हद तक परीक्षा-केंद्रित है, गिजुभाई के विचारों को पूरी तरह से लागू करना कठिन हो सकता है।
3. **समय और संसाधनों की आवश्यकता**: गिजुभाई द्वारा प्रस्तावित शिक्षण पद्धतियाँ अधिक समय और संसाधनों की मांग करती हैं, जो हर स्कूल के लिए संभव नहीं हो सकता।

निष्कर्ष / Conclusion

"दिवास्वप्न" एक ऐसी पुस्तक है जो भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक मील का पत्थर साबित हुई है। गिजुभाई बधेका ने इस पुस्तक के माध्यम से न केवल शिक्षा के क्षेत्र में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, बल्कि बच्चों के प्रति हमारे दृष्टिकोण को भी बदलने का प्रयास किया। उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हैं जितने उस समय थे।यह पुस्तक हमें याद दिलाती है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचनाओं का हस्तांतरण नहीं, बल्कि बच्चों में सीखने की प्रेरणा जगाना, उनकी रचनात्मकता को प्रोत्साहित करना और उन्हें जीवन के लिए तैयार करना है। "दिवास्वप्न" हर शिक्षक, अभिभावक और शिक्षाविद् के लिए एक अनिवार्य पाठ है, जो हमें बच्चों की दुनिया को उनकी नजरों से देखने और समझने का अवसर देता है।अंत में, यह कहना उचित होगा कि "दिवास्वप्न" केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि एक विचार है - एक ऐसा विचार जो हमें बेहतर शिक्षक, बेहतर अभिभावक और अंततः एक बेहतर समाज बनने की प्रेरणा देता है। गिजुभाई का यह "दिन का सपना" वास्तव में एक ऐसा सपना है जिसे साकार करने की आवश्यकता आज भी उतनी ही है जितनी पहले थी।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-02, Dec.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Dec-2024/24

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

Syad Abdul Wahid Shah

For publication of Book Review title

"दिवास्वप्न (Diva Swapna)"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-02, Month December, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com